लीलाधर जगूड़ी

आज का दिन

पिछले दिनों को लाशों की तरह
ठिकाने लगाकर आया हुआ
हमारी दुनिया में आज का दिन
अकेला नहीं आया है

पिछले दिनों के उजाले को धोकर
एसिया के अँधेरे समुद्रों में
आज का दिन
जहाज़ों, नावों, रात में चलती रेलों
और बसों से आया है।

लीलाधर जगूड़ी, बची हुई पृथ्वी
दिल्ली, राजकमल प्रकाशन 1991:38